निगम सामाजिक उत्तरदायित्व जोखिम आकलन

बिना गहन विश्लेषण के नि.सा.उ. एवं जोखिम प्रबन्धन के बीच सम्बन्धों एवं निर्भरताओं की तलाश करने के प्रयास में ऐसा प्रतीत होता है कि ये दूर की संकल्पनाएँ हैं और इनमें कोई अधिक समरूपता नहीं है। किन्तु इसे जैसा पूर्व में प्रस्तुत किया गया था, नि.सा.उ. का एक लक्ष्य नकारात्मक प्रभाव को कम करना है जिसे जोखिम प्रबन्धन की प्रक्रिया में प्रयुक्त साधनों के उपयोग द्वारा जोखिम के आलोक में देखा जा सकता है। जोखिम प्रबन्धन स्वयं में कोई एकीकृत प्रक्रिया नहीं है। इसका निर्माण व्यापक रूप से उस सन्दर्भित जोखिम पर निर्भर करता है। इसी प्रकार, नि.सा.उ. जोखिम का प्रबन्धन उचित उपकरणों के प्रयोग द्वारा किया जाना चाहिए। ये प्राय: प्रचालनात्मक जोखिम प्रबन्धन अथवा अधिक सुनिश्चित गैर-वित्तीय, प्रतिष्ठात्मक जोखिम की विधियाँ हैं।

कम्पनियों द्वारा नि.सा.उ. के क्षेत्र में जोखिम के प्रबन्धन का निर्णय लेने का कारण छवि को उन्नत करने तथा उत्तम प्रतिष्ठा बनाये रखने की आकांक्षा से सम्बद्ध है। आईएसओ 26000 में अभिचिह्नित सामाजिक उत्तरदायित्व के क्षेत्रों के आधार पर जोखिम के क्षेत्रों में निम्नलिखित सम्मिलित हैं :

- संगठनात्मक व्यवस्था,
- मानवाधिकार,
- कार्य सम्बन्ध,
- प्रकृति का संरक्षण,
- ईमानदार बाजारी संक्रियाएँ,
- ग्राहकों के साथ सम्बन्ध,
- सामाजिक प्रतिबद्धता।

नि.सा.उ. जोखिम अनेक कारकों का परिणाम है जो व्यापरिक गतिविधियों को निम्नलिखित आधारों पर प्रभावित करता है :

- **अर्थशास्त्र** - जैसे व्यापारिक मूल्य के प्रबन्धन की विधि, निवेश नीति, प्रतिलाभ नीति, आपूर्तिकर्ताओं एवं ग्राहकों के साथ सम्बन्धों का प्रबन्धन,
- **पर्यावरणीय** - जैसे संसाधनों की उपलब्धता, पारिस्थितिकीय आपदाएँ, प्रकृति के संरक्षण में परिवर्तन, वैधानिक विनियमन, असफलताएँ, उत्पादन विधियाँ, आपूर्ति शृंखला का विस्तार,
- **वैधानिक** - जैसे विनियमों की उपस्थिति एवं कठोर वैधानिक तन्त्र,
- **सांस्कृतिक** - जैसे मूल्यों की व्यवस्था तथा संगठन के सदस्यों का व्यवहार,

– **व्यक्तिगत** - जैसे संगठनात्मक मामलों के सम्बन्ध में वैयक्तिक उपागम।

इस प्रकार नि.सा.उ. जोखिम प्रबन्धन की प्रक्रिया में पारम्परिक तत्वों का समावेश होगा :

– जोखिम का अभिज्ञान,
– मूल्यांकन (जोखिम आकलन),
– जोखिम प्रबन्धन विधियों का विवरण तथा अनुप्रयोग,
– जोखिम मूल्यांकन एवं निगरानी।

जोखिम का अभिज्ञान

प्रथम चरण जोखिम का अभिज्ञान है। जोखिम रजिस्टरों, वार्षिक प्रतिवेदनों तथा प्रशासनिक दस्तावेजों में सम्भावित जोखिमों के विषय में सूचना प्राप्त की जा सकती है। अभौतिक जोखिमों पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए। जोखिमों की तैयार सूची को ध्यानपूर्वक देखना चाहिए ताकि इसकी कमियों और दोषों की पहचान हो सके और इसे विश्लेषण के परिणामों के अनुरूप पूरा करना चाहिए ताकि महत्त्वपूर्ण जोखिम को अनदेखा करने का अवसर समाप्त किया जा सके। अगला चरण विशेषज्ञ के ज्ञान एवं बाहरी आँकड़ों जैसे मानदण्ड अथवा उपलब्ध जोखिम वर्गीकरणों के आधार पर जोखिम का आरेखण करना है। इस चरण में जोखिम के लक्षणों पर उन क्षेत्रों के लिए जहाँ संगठन का प्रचालन होता है और प्रतिष्ठा पूँजी पर जोखिमों के प्रभाव के लिए विशेष ध्यान देना चाहिए, नि.सा.उ. जोखिम अभिज्ञान पर्याप्त एवं पूर्ण प्रक्रियाओं के आधार पर तैयार करना चाहिए जो प्रलेखित हो और इस प्रक्रिया में संलिप्त सभी लोगों के संज्ञान में हो।

जोखिम प्रबन्धन

जोखिम ऐसे सम्भावित और परिणामी उपस्थितियों का संयोजन है जो किसी संगठन के लिए खतरा होता है। इस प्रकार जोखिम आकलन व्यक्तिनिष्ठ है और इसके प्रत्यक्षीकरण पर निर्भर करता है। साझेदारों द्वारा जोखिम का प्रत्यक्षीकरण किसी अन्य संगठन से पर्याप्त भिन्न हो सकता है। यह कहा जा सकता है कि नि.सा.उ. की विषय-वस्तु कार्यवाही करना है ताकि साझेदार खतरों का उचित प्रत्यक्षीकरण कर सकें। नि.सा.उ. जोखिम प्रबन्धन, जो कि जोखिम की सम्भावित उपस्थिति के आकलन और संगठन पर इसके प्रभाव से निर्मित होता है, को जोखिम वाहक किसी घटना तथा साझेदारों पर इसके प्रभाव और उनकी इस घटना के प्रत्यक्षीकरण से सम्बन्धित समझना चाहिए। यह हो सकता है कि जोखिम की प्रत्याशा तथा इसके प्रभाव के सम्बन्ध में जोखिम प्रबन्धन का मूल्यांकन साझेदारों द्वारा किये गये मूल्यांकन से बहुत न्यून हो। साझेदारों के प्रत्येक समूह हेतु एक ही जोखिम के कुछ मूल्यांकनों की तैयारी भी उनके महत्त्व के उचित स्तर को संकेत करते हुए की जानी परामर्श

योग्य है। साझेदारों के मूल्यांकन के लिए हम साझेदारों की प्रतिबद्धता का मापक उपयोग में ला सकते हैं।

जोखिम प्रबन्धन

जोखिम को कम करने के लिए नीति की उचित तैयारी हेतु अनेक नियन्त्रण उपायों के उपयोग पर विचार करना वांछनीय है। यही कारण है कि किसी लक्ष्य तक पहुँचने के सम्बन्ध में उनकी यथार्थता से सम्बन्धित आकलन के लिए नियन्त्रण उपायों का प्रयोग किया जाता है। जोखिम के सम्भावित परिदृश्य के अभिज्ञान से प्रत्येक परिदृश्य हेतु उचित नीति की तैयारी अथवा परिदृश्य की उपस्थिति से सम्बद्ध वित्तीय हानियों के लिए आवश्यक धन का आकलन सम्भव होना चाहिए। परिदृश्य के परिज्ञान की तैयारी हेतु इसकी सम्भावना तथा घटनाओं के मध्य सम्बन्धों को ध्यान में रखना आवश्यक है। प्रदत्त परिदृश्य के तत्काल घटित होने की सम्भावना तथा उसकी सीमा का प्रकटीकरण इसी प्रकार किया जा सकता है।

जोखिम मूल्यांकन एवं निगरानी

नि.सा.उ. जोखिम प्रबन्धन की प्रक्रिया पूर्ण करने के लिए इसके मूल्यांकन तथा इसके स्तर की निगरानी करना आवश्यक है। इससे हम प्रयोग में लाई जा रही नीति की कुशलता तथा जोखिम नियन्त्रण के साधनों की जाँच कर सकते हैं। इस चरण में नि.सा.उ. प्रबन्धन साधनों, विशेष रूप से नैतिक आचारों, ह्विसल-ब्लोइंग नीति, कानूनी प्रक्रिया अथवा सामाजिक आडिट का प्रयोग किया जायेगा। प्रयुक्त साधनों का उचित मूल्यांकन एक महत्त्वपूर्ण संकेत है और यह न केवल कार्यविधि का प्रबन्धन करता है बल्कि जोखिम के स्तर को कम करने एवं साझेदारों के प्रत्यक्षीकरण पर भी पर्याप्त प्रभाव डालता है। जोखिम की सतत निगरानी से जब जोखिम अस्वीकार्य स्तर पर पहुँच जाता है तो उचित दिशा में प्रतिक्रिया करनी सम्भव हो जाती है। इस चरण में प्रमुख जोखिम सूचक (केआरआई) एवं प्रमुख निष्पादन सूचक (केपीआई) विशेष रूप से उपयोगी हैं। इससे जोखिम की रिपोर्टिंग के साधनों का सृजन सम्भव है जो प्रबन्धन सूचना को ग्राफीय ढंग से प्रदर्शित करना सम्भव करता है। सूचना प्रवाह के उचित चैनल उपलब्ध कराने के लिए रिपोर्टिंग, लक्ष्यों के प्रस्तुतीकरण तथा उनकी पहचान के स्तर के उचित प्रारूप की संस्थापना महत्त्वपूर्ण है।